रिकार्ड– निर्बल से लड़ाई बलवान की..... ओमशांति प्रातःक्लास 30.12.67

ओमशांति। मीठे2 रुहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप रोज2 पहले समझाते हैं कि अपन को आत्मा समझ बैठो और बाप को याद करो। कहते हैं ना अटेंशन प्लीज। तो बाप कहते हैं एक तो अटेंशन दो बाप के तरफ। बाप कितना मीठा है। उनको कहा जाता है प्यार का सागर। ज्ञान का सागर। तो तुमको भी बहुत प्यारा बनना है। मंसा ,वाचा ,कर्मणा। हर बात में तुमको खुशी बहुत रहनी चाहिए। कोई को भी दुःख न देना है। बाप भी किसको दुःखी नहीं करते। बाप आये ही हैं सुख करने लिए। तुमको भी कोई प्रकार का किसको दुःख नहीं देना है। कोई भी ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए। मंसा में भी न आना चाहिए ;परंतु यह अवस्था पिछाड़ी में होगी। कुछ न कुछ कर्म इन्द्रियों से भूल होती है। अपन को आत्मा समझेंगे, दूसरे को भी आत्मा भाई समझेंगे तेा फिर किसको दुःख नहीं देंगे। शरीर ही नहीं देखेंगे तो दुःख कैसे देंगे? इसमें गुप्त मेहनत है। यह सारा बुद्धि का काम है। अभी तुम पारस बुद्धि बन रहे हो। तुम जब पारस बुद्धि.....तो बहुत तुमने सुख देखा। तुम ही सुखधाम के मालिक थे ना। यह है दुःखधाम। यह तो बहुत सिम्पल है। वह है हमारा स्वीटहोम। फिर वहां से पार्ट बजाने आये हैं। दुःख का पार्ट बहुत समय बजाया है। अब सुखधाम चलना है। इसलिए सबको भाई2 समझना है। आत्मा आत्मा को दुःख नहीं दे सकती। अपन को आत्मा समझ आत्मा से बात कर रहे हैं। आत्मा ही तख्त पर विराजमान है। हम उन पर बैठी हैं। यह भी शिवबाबा का रथ है ना। बच्चियां कहती हैं हम शिवबाबा के रथ को श्रृंगारते हैं। शिवबाबा के रथ को खिलाते हैं। तो शिवबाबा ही याद रहता है। वह है ही कल्याणकारी बाप। बाप कहते हैं मैं 5तत्वों का भी कल्याण करता हूं। वहां कोई भी चीज कब तकलीफ नहीं देती। यहां तो कब तूफान , कब ठंडी ,कब क्या होती है? वहां तो सदैव बहारी मौसम रहती है। दुःख का नाम ही नहीं। वह है ही हेविन। बाप आते हैं तुमको हैविन का मालिक बनाने। उंच ते उंच भगवान है। उंच ते उंच बाप ,उंच ते उंच सुप्रीम टीचर भी है। तो जरूर उंच ते उंच ही बनावेंगे ना। तुम यह(ल.ना.) थे। यह सभी बातें भूल गए हो। भक्तिमार्ग में कितना घोर अंधियारे में मनुष्य हैं। अंधियारे में ठोकरें खाय कितने दुःखी होते हैं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। ऋषियों, मुनियों आदि से पूछते थे आप रचता और रचना को जानते हो तो नेति2 कह देते थे। जबकि उनके पास ही ज्ञान ना था तो फिर परम्परा कैसे चल सकता? बाप कहते हैं यह ज्ञान अब ही मैं तुमको देता हूं। सदगति हो गई फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। दुर्गति होती नहीं। सतयुग को कहा ही जाता है सदगति। यहां है दुर्गति ;परंतु यह भी किसको पता नहीं है कि हम दुर्गति में हैं। बाप के लिए ही गाया जाता है लिबरेटर गाइड, खेवैया। विषय सागर से सबकी नइया पार लगाते हैं। उसको कहते हैं क्षीर सागर। विष्णु को भी क्षीर सागर में दिखाते हैं। यह सब है भक्तिमार्ग का ज्ञान। बड़ा2 तालाब है। विष्णु का बड़ा2 चित्र दिखाते हैं। बाप समझाते हैं तुमने ही सारे विश्व पर राज्य किया है। अनेक बार हार खाई और जीत पहनी है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। तो खुशी से बनना चाहिए ना। भल गृहस्थ व्यवहार में हो ;परंतु कमल फूल समान पवित्र रहो। अभी तो तुम कांटे से फूल बन रहे हो। समझ में आता है यह सब .....है। एक/दो को कितना तंग करते हैं। मार देते हैं। तो बाप मीठे2 बच्चों को कहते हैं तुम सबकी अभी वानप्रस्थ अवस्था है। छोटे–बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। तुम वाणी से परे जाने लिए पढ़ते हो। बाप कहते हैं सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। फिर यह (रसम) भक्तिमार्ग में चलती है। 60वर्ष के ....गुरू करते हैं। तुमको अब मिला है सदगुरू। वह तो वानप्रस्थ में तुमको ले ही जावेंगे। यह है यूनिवर्सिट। भगवानुवाच है ना। मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूं। फिर राजाओं का राजा बनाता हूं। जो पूज्य राजायें थे वही फिर पुजारी राजायें बने हैं। तो बाप कहते हैं बच्चे अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। दैवी गुण धारण करो। भल खाओ–पीओ.....श्रीनाथ द्वारे में जाओ तो वहां घी के माल ढेर मिलते हैं। घी के कुयें बने हुए हैं। वह सब फिर खाते कौन हैं? पुजारी।

श्रीनाथ और जगतनाथ दोनों काले हैं। जगतनाथ के मंदिर में बाबा ने कहा था बहुत गंदे चित्र देवताओं के हैं। अभी वह चित्र है या गवर्मेंट ने बंद कर दी है यह कोई जाये देख आवे। कलकत्ते के नजदीक है कटक। देख कर आवेंगे सर्विस भी करके आवेंगे। कलकत्ते वाले को ही डायरैक्शन मिलती है। वहां चावल का हन्डा बनाते हैं। जो पक जाने से चार भाग हो जाती है। सिर्फ चावल का ही भोग लगता है ;क्योंकि अभी साधारण है ना। उस तरफ गरीब इस तरफ साहुकार। अभी तो देखो कितनी गरीबी है। खाने को भी नहीं मिलता है। सतयुग में तो सब कुछ है। तो बाप आत्माओं को ही बैठ समझाते हैं। शिवबाबा बहुत मीठा है। वह तो है निराकार। प्यार आत्मा को ही किया जाता है। शरीर तो जल गया। उनकी आत्मा को ही बुलाते हैं। ज्योत जगाते हैं। इससे सिद्ध है आत्मा का अंधियारा होता है। आत्मा है ही शरीर रहित। तो फिर अंधियारे आदि की बात कैसे हो सकती? वहां तो यह बातें होती नहीं। यह है सब भक्तिमार्ग। आत्मा को अंधियारा कैसे होगा? वह तो एक शरीर छोड़ जाय दूसरा लेती है। तो बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। ज्ञान बहुत मीठा2 है। इसें आंखें खोलकर सुनना चाहिए। बाप को तो देखेंगे ना। तुम जानते हो शिवबाबा यहां विराजमान है। तो आंखें खोलकर बैठना चाहिए ना। आंखें बंदकर बैठते हैं तो गोया धुंधकारी हैं। बेहद के बाप को देखना चाहिए ना। आगे बच्चियां बाबा को देखने से ही ध्यान में चली जाती थीं। आपस में भी बैठे ध्यान में चली जाती थीं। आंखें बंद और दौड़ती रहती थीं। कमाल तो थी ना। बाप समझाते रहते हैं एक/दो को देखते हो तो ऐसे समझो हम भाई आत्मा से बात करते हैं। भाई को समझाते हैं तुम बेहद के बाप की राय नहीं मानेंगे। तुम यह अंतिम जन्म पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनियां के मालिक बनेंगे। बाबा बहुतों को समझते हैं। कोई तो फट से कह देते हैं बाबा हम जरूर पवित्र बनेंगे। पवित्र रहना तो अच्छा है। कुमारी पवित्र है तो सब उनको माथा टेकते हैं। शादी करती हैं तो पुजारी बन पड़ती है। सभी को माथा टेकना पड़ता है। तो प्योरिटी अच्छी है ना। प्योरिटी है तो पीस प्रॉसपर्टी भी है। सारा मदार पवित्रता पर है। बुलाते भी हैं हे पतित–पावन आओ। पावन दुनियां में रावण होता नहीं। वह है ही रामराज्य। सभी क्षीरखंड रहते हैं। धर्म का राज्य है फिर रावण कहां से आया? रामायण आदि कितना प्रेम से बैठ सुनाते हैं। यह सब है झूठ। झूठ में मनुष्यों को कितना मजा आता है। कहा जाता है सच्च तो बिठो नच। बाबा आते हैं तो बच्चियां डांस करने लग पड़ती हैं। यह है खेल–पाल। इसमें कुछ है नहीं। कोई2 को संशया आ जाता था इसलिए बंदर कर दिया। विघ्न तो पड़ते हैं ना। सच्च की बेड़ी का गायन है लड़े2 पर डूबे नहीं। और कोई सतसंग में जाने की मना नहीं करते हैं। यहां कितना रोकते हैं। बाप ज्ञान देते हैं। तुम बनते हो ब्रह्माकुमारियां और ब्रह्माकुमार। तुमको ब्राह्मण तो जरूर बनना है। बाप है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला तो जरूर हम स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। हम यहां नर्क में क्यों पड़े हैं? यह पहले नम्बर में जो स्वर्ग में था सो अब आकर नर्क में पड़ा है। खयाल में नहीं था। यहां नर्क में हम क्यों पड़े हैं? अभी समझ में आता है। आगे हम भी पत्थर बुद्धि पुजारी थे। अभी फिर पूज्य बनते हैं 21जन्मों के लिए। 63जन्म पुजारी बने हैं। अभी फिर हम पूज्य स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह है ही नर से नारायण बनने की नालेज। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। पतित राजायें पावन राजाओं को नमन करते हैं ना। हरेक राजा के महल में मंदिर जरूर होगा। वह भी राधे–कृष्ण का वा ल.ना. का या राम–सीता का? आजकल तो गणेश, हनुमान आदि की भी मंदिर बनाते हैं। भक्तिमार्ग में कितना अंधश्रद्धा है। अभी तुम समझते हो बरोबर हमने राजाई की फिर वाममार्ग में गए। अभी बाप समझाते हैं यह तुम्हारा अंतिम जन्म है। मीठे बच्चे पहले2 तुम स्वर्ग में थे। फिर उतरते2 पट में आय पड़े हो। तुम कहेंगे हम बहुत उंच थे। फिर बाप हमको उंच चढ़ाते हैं। हम हर 5000वर्ष बाद पढ़ते ही आये हैं। उनको कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाता हूं। सारे विश्व में तुम्हारा राज्य होगा।

गीत में भी है ना बाबा आप ऐसा राज्य देते हो जो कोई छीन न सके। अभी तो कितनी पार्टीशन है। पानी के उपर ,जमीन के उपर झगड़ा चलता है। अपने2 प्रांत की सम्भाल करते रहते हैं। न करे तो छोकड़े लोग पत्थर मारने लग पड़ेंगे। वह समझते हैं यह नवजवान पहलवान बन भारत की रक्षा करेंगे। सो ही पहलवानी अभी दिखाते रहते हैं। अंग्रेजी के उपर कितना हंगामा किया है। बच्चे पूछते हैं अब हम क्या करें? कपड़ा दे देवें जैसे और सभी करते हैं। बाबा ने कहा है थोड़ा ठहरो तो सही। इन्श्योर करा दो। तुम डरते क्यों हो? प्यार से समझाओ। दुनियां की हालत देखो कैसी है। रावण राज्य है ना। बाप कहते हैं यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। तुम अभी दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। देवताओं और असुरों की लड़ाई कैसे होगी? तुम तो डबल अहिंसक बनते हो। वह हैं डबल हिंसक। देवताओं को भी डबल अहिंसक कहा जाता है। बाबा ने कहा है किसको वाचा से दुःख देना भी हिंसा है। तुम देवता बनते हो ना। तो हर बात में रॉयल्टी होनी चाहिए। खान–पान आदि न बहुत उंचा ,न बहुत हल्का। एक रस। राजाओं आदि का बोलना बहुत कम होता है। प्रजा का भी राजा में बहुत प्यार रहता है। यहां तो देखो क्या लगा पड़ा है। कितना आंदोलन है। बाप कहते हैं जब ऐसी हालत हो जाती है तब मैं आकर विश्व में शांति करता हूं। गवर्मेंट समझती है सभी मिलकर एक हो जायें। भल सभी ब्रदर्स तो हैं ;परंतु यह तो खेल है ना। बाप बच्चों को कहते हैं तुम कोई फिक्र नहीं करो। अनाज की तकलीफ है। अरे, 9वर्ष के अंदर अनाज तो इतना हो जावेगा बिगर पैसे जितना चाहे उतना मिल सकता है। हम वह राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम हेल्थ को ऐसा बना देते हैं जो कब कोई रोगी होते ही नहीं। गारंटी है। कैरेक्टर भी हम उन देवताओं जैसे बनाते हैं। जैसा2 मिनिस्टर होगा ऐसा ही समझा सकते हैं। युक्ति से समझाना चाहिए ;पंरतु पत्थर बुद्धि समझते ही कहां हैं? ओपीनियन में बहुत अच्छा लिखते हैं ;परंतु अरे, तुम भी तो समझो ना। तो कहते फुर्सत नहीं। तुम बड़े लोग कुछ आवाज़ करेंगे तो गरीबों का भी भला होगा। बाप समझाते हैं अभी सब सिर के उपर काल खड़ा है। आजकल करते2 काल खा जावेगा। तुम कुम्भकरण के मिसल बन पड़े हो। बच्चों को समझाने में बड़ा मजा भी आता है। बाबा ने ही यह चित्र आदि बनवाई है। दादा को भी थोड़े ही यह ज्ञान था। तुमको वर्सा भी लौकिक और पारलौकिक बाप से मिलता है। अलौकिक बाप का वर्सा नहीं मिलता। यह तो दलाल है। इनका वर्सा नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा को याद करना नहीं है। इसलिए बाबा फोटो भी निकालने नहीं देते। मेरे से तो तुमको कुछ भी मिलता नहीं है। मैं भी पढ़ता हूं। वर्सा है ही एक हद का, दूसरा बेहद का। प्रजापिता ब्रह्मा क्या वर्सा देंगे? इसलिए इनका फोटो भी फाल्तू है। मुफ्त अपना अकल्याण करते हैं। बाप तो कहते हैं मामेकम् याद करो। यह तो .... है ना। रथ को तो याद नहीं करना है। बाबा कहते हैं फोटो देख कहां फंस न पड़े। मम्मा का भी चित्र रखने की दरकार नहीं है ;परंतु मम्मा के मुरीद भी तो हैं ना। वास्तव में तो मम्मा भी कहती थी बाप को याद करो। मेरे को याद करने से कुछ भी नहीं मिलेगा। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। उंच ते उंच भगवान कहा जाता है। बाप आत्माओं को ही बैठ समझाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है। एक खल छोड़ दूसरा लेती है। जैसे सर्प का मिसाल है। ब्राह्मणियां भी तुम हो। ज्ञान का भूं2 कर विश्व का मालिक बना देते हो। बाप जो विश्व के मालिक बनाते हैं ऐसे बाप को याद क्यों नहीं करेंगे? अब बाप आया हुआ है तो वर्सा क्यों नहीं लेना चाहिए? ऐसे क्यों कहते हो कि फुर्सत नहीं मिलती? अच्छे बच्चे तो सेकेंड में समझ जाते हैं। बाबा ने समझाया है लक्ष्मी की पूजा करते हैं। अब लक्ष्मी से क्या मिलता है और अम्बा से क्या मिलता है? लक्ष्मी तो हुई देवता। उनसे पैसे आदि की भीख मांगते हैं। अम्बा तो विश्व का मालिक बनाती है। कामनायें सब पूरी करती है श्रीमत द्वारा। अच्छा, बच्चो को याद प्यार गुडमार्निंग।